शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2014

नरेश मेहता के उपन्यास साहित्य में मध्यवर्ग

रेखा सैनी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब कहा जाता है, साहित्य मनुष्य जीवन के सम्पूर्ण क्रिया-कलापों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। एक साहित्यकार समाज का ऐसा सजग प्रहरी है, जो समाज में घटने वाली हर परिस्थिति को अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में जब से उपन्यासों का सृजन प्रारंभ हुआ उस समय अंग्रेजी शासन, औद्योगिक क्रांति, पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप समाज में बहुत से परिवर्तन आये। आधुनिक युग में मध्यवर्ग समाज का प्रमुख तथा व्यापक वर्ग होने के नाते साहित्य का भी केन्द्रीय वर्ग रहा है। साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा में इस वर्ग के जीवन सम्बन्धी समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। मध्यवर्ग हिन्दी साहित्य क्षेत्र का पयार्य ही बन चुका है। देश की पराधीनता, जनता का शोषण तथा लोगों के हृदयों की व्यथा को व्याकुलता से साहित्यकारों ने अभिव्यक्ति का विषय बनाया है। प्रस्तुत शोध पत्र में नरेश मेहता के साहित्य में मध्यवर्ग की तलाश की गयी है।

प्रस्तावना

मध्यवर्ग का उद्भव औद्योगिक क्रान्ति और पूँजीवादी व्यवस्था के जन्म के साथ जुड़ा हुआ है। मध्यवर्ग की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए डा. मूलचन्द गौतम ने लिखा है कि "इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति फ्रांस की राज्य क्रान्ति और रूसी समाजवादी क्रान्ति तथा दो विश्वयुद्धों ने विश्व की आर्थिक व्यवस्था को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया। जिन विकसित और विकासशील देशों में पूँजीवाद का विकास हुआ वहाँ मध्यवर्ग विस्तृत होता गया ।"1 ऐसी परिस्थितियों में ही भारत में मध्यवर्ग का उदय हुआ । भारत में मध्यवर्ग के विकास में अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों का सहयोग तथा प्रभाव रहा हैं मध्यवर्ग की व्यथा गाथा का वर्णन विभिन्न साहित्यकारों ने अपने साहित्य में चित्रित किया है। आधुनिक युग में हिन्दी साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई है। और साहित्य में उपन्यास विधा में मध्यवर्ग पर अधिक सृजन हुआ, क्योंकि अधिकांश साहित्यकार मध्यवर्ग से जुडे हुए थे। इनमें श्री नरेश मेहता का भी महत्वपूर्ण स्थान है। मेहता जी ने सन् 1959 ई. से सृजन कार्य प्रारम्भ कर दिया था। धीरे-धीरे श्री मेहता एक श्रेष्ठ कवि एवं कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। इनकी दृष्टि अत्यंत विस्तृत होकर व्यापक स्तर की रही। इनके सृजन साहित्य में विविधता दिखाई देती है। वर्ग परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से श्री नरेष मेहता का उपन्यास साहित्य महत्वपूर्ण माना जाता है। ओजस्वी व्यक्तित्व से युक्त देश के सर्वोच्च सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से अंलकृत कवि उपन्यासकार, नाटककार श्री नरेश मेहता हिन्दी साहित्य जगत के प्रमुख आधारस्तम्भ हैं। "जीवन संग्राम के जीवंत योद्धा, उदार, रूढ़िमुक्त, आस्तिक, बहुपठित, बहुबोली पारखी, बहुभाषा-विज्ञ, जागरूक

इतिहासकार, पुराण प्रेमी, पूर्वग्रह मुक्त, प्रगतिशील विचारक, कुशल अभिनेता, सुधी संपादक, अपूर्व शैलीकार, कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, लेखों, निबंधों एवं संस्मरणों के रचियता आदि सबको मिलाकर जो व्यक्तित्व बनता है उनका नाम - श्री नरेश मेहता।"2 नरेश मेहता ने समाज के मध्यवर्ग पर अपना साहित्य सृजन किया है। यह आधुनिककालीन परिस्थितियों की उपज है। मध्यवर्ग ऐसे लोगो की श्रेणी है, जो आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से आपस में समानता रखते हैं। वर्तमान भारतीय समाज में मध्यवर्ग की उपस्थिति सर्वाधिक है। हमारे देश में इस वर्ग के विकास में अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों तथा घटनाओं का बहुत बड़ा सहयोग रहा है। नरेश मेहता ने मध्यवर्ग की सम्पूर्ण स्थितियों व उनके जीवन के प्रत्येक सन्दर्भ को चित्रित करने का प्रयास किया है।

व्यक्तित्व

अत्यन्त परिश्रमी और बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री नरेश मेहता का जन्म 15 फरवरी 1922 को मालवा के शाजापुर कस्बे में हुआ था। परिवार गुजराती ब्राह्मण और संस्कार से ही आर्ष परम्परा से निष्णात था। जिन परिस्थितियों में श्री नरेश मेहता का जन्म एवं प्रारंभिक विकास हुआ वे अपने आप में इतनी विविधता पूर्ण और कठोर रही कि निश्चित रूप से ऐसी आंच में तपकर कोई विराट व्यक्तित्व ही निकल सकता है। उनके पिता बिहारी लाल के तीन विवाह हुए थे। पिता को दो पत्नियां खोकर तीसरी पत्नी से पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। परन्तु जन्म के डेढ़ वर्ष पश्चात् ही माँ का स्वर्गवास हो गया। ऐसे में पिता का अपने पुत्र के प्रति एक अजीब संकुल भाव होना स्वाभाविक ही था। अपने जीवन के अनुभवों तथा समकालीन परिस्थितियों को नरेश मेहता ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। नरेश मेहता जी ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग के सभी पहलुओं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्षनिक और मनोवैज्ञानिक आदि को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इसके साथ ही मेहता जी ने मानवीय कामनाओं, नियति और मृत्यु आदि को भी विविधता से उपन्यासों में रेखांकित किया है। आपने अपने उपन्यासों को आधुनिकता से जोड़कर प्रस्तुत किया है। ''उन्होनें जन-जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म स्थिति को पहचाना है, पकड़ा है और उसमें चल रहे सुख-दुख, हर्ष-विषाद को तथा शक्ति और संकल्प को नजदीकी गहराई से देखा, समझा और शब्दबद्ध किया है। अतः यह तथ्य आसानी से स्वीकार किया जा सकता है कि मेहता जी का व्यतित्व जनवादी है । उसमें जीवन है, जीने की तमन्ना है, महत्वाकांक्षाएं हैं, स्वाभिमान है, आस्था है, कर्म है और कर्म की निरन्तरता।"

रचनाधर्मिता

आपका प्रमुख उपन्यास 'यह पथ बन्धु था' सर्वाधिक चर्चित उपन्यास रहा है। आपने 'डूबते मस्तूल' उपन्यास से शुरूआत की। अभी तक आपके कुल सात उपन्यास और तैंतीस अन्य रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। प्रमुख उपन्यासों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है : - डूबते मस्तूल, धूमकेतू : एक श्रुति, यह पथबन्धु था, दो एकान्त, नदी यशस्वी है, प्रथम फाल्गुन, उत्तरकथा भाग-1 और उत्तरकथा भाग-2। डूबते मस्तूल प्रकाशन की दृष्टि से नरेश मेहता का यह पहला उपन्यास है, इसका प्रकाशन 1954 ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ। नरेश मेहता जी की दृष्टि मानवतावादी है। आपने मानवीय पीड़ा का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। ''आज के मध्यवर्गीय समाज में सबसे चिन्त्य स्थिति नारी की है। जिस तथाकथित आधुनिकता का प्रवेश उसके

जीवन में हो रहा है उसके परिणाम स्वरूप नैतिक मानदण्ड बदल गए हैं और प्राचीन यौन-पवित्रता के समाज -मर्यादित बोध उसके समक्ष प्रश्न चिन्ह बनकर उपस्थित हो गए हैं। अतः स्त्री के जीवन मे अनेक विसंगतियां आ गई हैं। रंजना ऐसी ही नारी का प्रतिनिधित्व करती है। कहीं वह सामाजिक परिस्थितियों की क्रूरता का शिकार है और कहीं अपनी अहम्मन्य प्रकृति का।"4 इस उपन्यास में मध्यवर्गीय नारी उत्पीड़न की समस्या को रंजना के माध्यम से आपने स्पष्ट किया। रंजना के जीवन में कई पुरूष आते हैं किंतु कोई भी उसकी आत्मा के सौन्दर्य को नहीं देखता। अंत में वह आत्महत्या कर लेती है। उपन्यास में मेहता जी ने मध्यवर्गीय नारी के सामने उपस्थित पस्थितियों और समस्याओं को उजागर किया है। धूमकेतू : एक श्रुति श्री नरेश मेहता का यह दूसरा उपन्यास है, इसका प्रकाशन 1962 ई. में भारतीय साहित्य संग्रह प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ। इस उपन्यास की नियोजना चार खण्डों में की गई। प्रथम खण्ड 'श्रुति विस्तार' उपनाम से अभिहीत किया गया है। इस उपन्यास में मातृहीन बालक उदयन के मानसिक विकास का मनोवैज्ञानिक विवेचन किया गया है। जीवन की छोटी-छोटी परिस्थितियाँ किस प्रकार बाल मन को प्रभावित करती है और उसके विकास को दिशा देती है, इसका सूक्ष्म चित्रण उपन्यास में किया गया है। यह उपन्यास पूर्ण रूप से बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। इस उपन्यास में नरेश मेहता ने एक बालक के मन को मनोविज्ञान द्वारा अभिव्यक्त किया है। यह पथ बन्धु था नरेश मेहता का यह तीसरा उपन्यास है, इसका प्रकाशन 1962 ई. में लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से हुआ। यह प्रेमचन्द की परम्परा का ऐसा उपन्यास है, जिसमें मूल्यों के प्रति निष्ठावान व्यक्तियों का टूट जाना उनकी नियति है। इस उपन्यास में आदर्शवादी संस्कार सम्पन्न दम्पत्ति 'श्रीधर' और 'सरो' के जीवन संघर्ष की करूण कहानी कही गई है। "जहाज के पंछी की तरह श्रीधर क़स्बे (शाजापुर) से चलता है और इंदौर, उज्जैन, बलिया, बनारस, गोरखपुर वगैरह में भटकता अंत में यहीं लौट आता है- भंयकर टूटन, निष्फलता और आदर्शों के ध्वंस की साक्षात् प्रतिमा बनकर।"5 श्रीधर जिन मूल्यों को लेकर स्वतंत्रता संग्राम में संघर्ष करता है। वे अन्त में निरर्थक प्रमाणित होते है। उसका पूरा परिवार टूट जाता है और वह स्वयं को व्यर्थ अनुभव करता है। "मध्यवर्गीय परिवार की सरो (सरस्वती), उसकी पुत्री गुणवंती, सांमती परिवार की इंदु, वैश्या मालिनी सभी भाँति-भांति से शोषित और अभिशप्त हैं।"6 यह उपन्यास बहुत चर्चित रहा है। जीवन के आंतरिक अनुभवों को, उनकी गाठों को यह उपन्यास खोलता है। नरेश मेहता ने इस उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन की विषम परिस्थितियों का चित्रण प्रस्तुत किया है।

दो एकान्त

इसका प्रकाशन 1964 ई. में लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से हुआ। इस उपन्यास द्वारा आधुनिक समाज में स्त्री-पुरूष के बनते-बिगड़ते संबंधों और उससे उत्पन्न तनाव का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के नायक विवेक और नायिका वानीरा के माध्यम से लेखक ने मध्यवर्ग में दाम्पत्य जीवन की कहानी स्पष्ट की है। "विवेक एवं वानीरा मध्यम वर्ग के संकट-बोध के प्रतीक बनकर आते हैं। समाज में विघटित होते हुए मूल्यों, मर्यादाओं एवं मान्यताओं के बीच स्वातन्त्र्योत्तर परिवेश का व्यक्ति किस भांति आत्म-निर्वासित हो गया है उपन्यास इस तथ्य को बड़ी कुशलता से उभारता है।"7 विवेक द्वारा अपने कार्य के प्रति लगाव के

कारण वह अपनी पत्नी वानीरा को समय नहीं दे पाता, परिणामस्वरूप वानीरा का झुकाव अन्य पुरूष मेजर आनंद के प्रति बढ़ जाता है और वानीरा का आनंद से आतंरिक संबंध बंध जाता है, विवेक यह सब जान कर भी वानीरा के साथ वैवाहिक नाता होने के कारण समाज के डर से अपने रिश्ते को बनाये रखता है, वानीरा को पश्चाताप होता है और विवेक जीवन से समझौता कर जीता चला जाता है। इस उपन्यास के माध्यम से नरेश मेहता ने आधुनिक समाज में मध्यवर्ग के दाम्पत्य जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों, तनाव, आकांक्षाओं को यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है। मेहता जी का उद्देश्य मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन मे आने वाली विषमताओं को प्रस्तुत करना है। नदी यषस्वी है इसका प्रकाशन 1967 ई. में लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से हुआ। यह उपन्यास 'धूमकेतू : एक श्रुति' का दूसरा खण्ड है। श्री नरेश मेहता का यह मर्मस्पर्शी उपन्यास है। किशोर जीवन में निहित काव्य को पकड़ने की सफल चेष्टा है। इस उपन्यास में उस समय का चित्रण है, जब देश में अंग्रेज शासक थे। एक ओर जहाँ मध्यवर्गीय सरकारी कर्मचारियों और कुलीन परिवारों पर अंग्रेजो के रहन-सहन का प्रभुत्व था, तो दूसरी ओर देश की स्वाधीनता के लिए क्रांतिकारी और गांधीजी अपने-अपने तरीके से संघर्षरत थे। इसी पृष्ठभूमि पर यह उपन्यास 'छोटे साब' उदयन के अंग्रेज-परस्त चाचा के, अदृश्य भय से मुक्त होने की कहानी कहता है। इसमें उदयन किशोरावस्था में पहुँच गया है और अपनी अनंत जिज्ञासाओं के साथ जीवन में अग्रसर होता है। यहाँ भी उसके मनोवैज्ञानिक विकास का सूक्ष्म विवेचन किया गया है।

प्रथम फाल्गुन

इसका प्रकाशन 1968 ई. में लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से हुआ। इस उपन्यास का कथानक उस प्रथम प्रेम की मार्मिकता को अभिव्यक्त करता है जिसका सम्मोहन सार्वकालिक तथा सार्वदेशिक होता है। इस उपन्यास में दो पात्र गोपा और महिम द्वारा आज से 50-60 वर्ष पूर्व के लखनऊ का चित्रण किया है। उपन्यास में दोनों पात्रों का अपना निजपन है। जहाँ किसी तीसरे का कोई अर्थ या महत्व नहीं है। रागात्मकता के किन-किन और कैसे-कैसे प्रसंगो, स्थितियों तथा मुद्राओं से होकर गोपा और महिम यात्रा करते हैं। उच्च मध्यवर्गीय जीवन की विषमता का यथार्थ चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में नरेश मेहता का उद्देश्य मध्यवर्गीय समाज में प्रेम विडम्बनापरक स्थिति का चित्रण प्रस्तुत करना है।

उत्तरकथा

यह उपन्यास दो खण्डों में लिखा गया है। प्रथम खण्ड का प्रकाशन 1968 ई. में लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से हुआ तथा द्वितीय खण्ड का प्रकाशन 1982 ई. में लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से ही हुआ। उपन्यास के प्रथम खण्ड में व्यक्ति और समाज के बिखराव की जो भव्यता सन् 1930 ई. तक थी, वर्णित हुई है, गति तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आयी, अतः यह प्रथम खण्ड, द्वितीय खण्ड की भूमिका जैसा है। इसमें समाजशास्त्र के सहारे पुराने मालवा के खौफ़नाक अंधेरे को एक विषिष्ट सामाजिक स्थिति में एक निश्चित वरण की अनिर्वायता का सामना करते हुए उभारा गया है और उजाले में समस्याओं की एक श्रृंखला प्रस्तुत करते हुए आलोचनात्मक चित्र और चरित्र उकेरते हुए सार्थक समाधान की संभावना तक आना चाहा है। उपन्यास

में मध्यवर्गीय जीवन प्रणाली को मेहताजी ने बखूबी उभारा है। ब्राह्मण परिवार के माध्यम से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। परिवार में बिखराव, टूटन, आपसी कलह, गरीबी, बेरोजगारी, मंहगाई जैसी सामाजिक समस्याओं को मेहताजी ने उपन्यास में दर्शाया है। उत्तरकथा एक ऐसी कथा है जिसमें व्यक्ति मध्यवर्ग का होने के कारण विविध प्रकार के दुख-दर्द सहने तथा विडंबनापरक जीवन जीने को मजबूर होता है फिर चाहे वह नारी हो या पुरूष।

उत्तरकथा द्वितीय खण्ड

इस उपन्यास में महत्वपूर्ण बात यह है कि पूरा उपन्यास आध्यात्मिकता से विच्छिन्न नहीं है। उपन्यास का नायक शिवशंकर आचार्य दुःख भोग और दायित्व वहन के क्रम में करूणा का आकलन पुरूष है। अम्बक और दुर्गा भारतीय दम्पति के रूप में शिव-पार्वती जैसे आदर्श हैं। शिवशंकर आचार्य उपन्यास में महान चरित्र है,नरेश मेहता ने इस उपन्यास में कथा नहीं कही बल्कि उनके बीच से चेतन की अनिवार्य निरंतरता को तलाशा है। तभी तो यह उपन्यास केवल कथा नहीं है, बल्कि प्रश्नों के समाधान की, उत्तर की भी कथा है। ''मध्य भारत के 1900 से 1948 तक के मध्यवर्गीय ब्राह्मण कुटुम्ब के व्याज से तत्कालीन पारिवारिक और सामाजिक जीवन का महाकाव्य है। उपन्यास परिवार से शुरू होता है परंतु सम्पूर्ण राष्ट्र की धड़कनें महसूस करता है।''8 यह उपन्यास अपने नाम की सार्थकता को स्पष्ट करता है। इस उपन्यास के माध्यम से नरेश मेहता जी ने मध्यवर्गीय समाज के पारिवारिक जीवन को स्पष्ट अभिव्यक्ति किया है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि समाज की उन्नति में मध्यवर्ग का महत्वपूर्ण योगदान है। मध्यवर्ग ही केवल ऐसा वर्ग है, जिसमें समाज के आर्थिक दृष्टि से कमजोर एवं बुद्धिप्रधान लोग आतें है, जो शिक्षित समुदाय होने के कारण प्रभावित करते हैं। इस वर्ग की अधिकतर समस्याएं स्वयं की दुर्बलताओं की उपज है। प्रदर्शनप्रियता इस वर्ग में प्रमुख रूप से विद्यमान है। नरेश मेहता ने अपनी कथा कृतियों में मध्यवर्ग की विविध समस्याओं को चित्रित किया है। कहीं पुरुष अपनी महत्वाकांक्षा सुख-समृद्धि एवं उन्नति के लिए प्रयत्नशील दिखाई देता है। तो कहीं नारी पुरुष के शोषण का शिकार होती दिखाई देती है। नरेश मेहता के उपन्यास 'यह पथ बंधु था' तथा 'उत्तरकथा द्वितीय खण्ड' में स्वतन्त्रता पूर्व द्वितीय विश्वयुद्ध तथा ब्रिटिश साम्राज्य की स्वार्थ पूर्ण प्रशासन प्रणाली के कारण बेरोजगारी तथा मँहगाई का चित्रण हुआ है। अतः कहा जा सकता है कि कथाकार श्री नरेश मेहता हिन्दी कथा साहित्य के प्रत्यक्षदर्शी पुरोधा हैं । इन्होंने जिस वर्ग को जिया उसे अपनी कलम के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। इन्होंने समाज के मध्यवर्ग की प्रत्येक समस्या एवं प्रत्येक पहलु को उजागर करने का प्रयत्न किया है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक पक्षों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है|

सन्दर्भ

1.डा. मूलचन्द गौतम, हिन्दी नाटक की भूमिका मध्यवर्ग के सन्दर्भ में, पृ. स. 31

2.डा. अनीता कुमारी, नई कविता में नरेश मेहता : एक अनुशीलन, लोकवाणी संस्थान, दिल्ली, संस्करण 1990, पृ. स. 2

3. डा. अनीता कुमारी, नई कविता में नरेश मेहता : एक अनुशीलन, लोकवाणी संस्थान, दिल्ली, संस्करण 1990, पृ. स. 2

4. डा. विद्या सिंह, नरेश मेहता का साहित्य : अनुशीलन, ग्रंथायन संस्थान, अलीगढ़, संस्करण 1997, पृ. स.139

5. प्रभाकर श्रोत्रिय, भारतीय साहित्य के निर्माता नरेश मेहता, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृ. स. 45

6. वही, पृ. स. 45

7. डा. विद्या सिंह, नरेश मेहता का साहित्य : अनुशीलन, लोकवाणी संस्थान, दिल्ली, संस्करण 1990, पृ. स.141

8. प्रभाकर श्रोत्रिय, भारतीय साहित्य के निर्माता नरेश मेहता, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृ. स. 49